पाठ 7. अमर मृत्यु

पाठ का परिचय

इस पाठ का कथानक महान महिला वैज्ञानिक मैडम क्यूरी के जीवन पर आधारित है। शैली और मधु के दादा जी उन्हें मैडम क्यूरी की कहानी सुनाते हैं। मैडम मेरी क्यूरी का जन्म 7 नवंबर 1867 को पोलैंड में हुआ था। मेरी बचपन से ही दूसरे बच्चों की अपेक्षा गंभीर और खोजी स्वभाव की थी। मेरी के पिता वारसा के एक स्कूल में भौतिक विज्ञान और गणित पढ़ाते थे। मेरी की भी गणित और विज्ञान पढ़ने में विशेष रुचि थी। उनके पिता ने उनकी प्रतिभा को पहचाना तथा उन्हें प्रोत्साहित किया। मेरी की छोटी बहन ब्रोन्या भी उनकी ही तरह प्रखर बुद्धि की थी। परंतु उनकी पढ़ाई में आर्थिक रुकावटें आने लगीं। ऐसे में दोनों बहनों ने एक-दूसरे की सहायता की। पहले मेरी ने ट्यूशन पढ़ाकर पैसों से ब्रोन्या को अपनी पढ़ाई पूरी करने में सहायता की और फिर ब्रोन्या ने नौकरी करके मेरी की आर्थिक मदद की। आखिर मेरी ने पेरिस के सारबोर्न विश्वविद्यालय से पहले भौतिक और फिर गणित में परास्नातक की उपाधि ली। इसके बाद उन्हें पिचलैंड नामक अयस्क पर शोध करने का अवसर मिला। शोध के दौरान ही मेरी की भेंट पियरे से हुई। वे भी अपना जीवन मेरी की तरह विज्ञान को ही समर्पित करना चाहते थे। इसलिए दोनों ने विवाह कर लिया। चार वर्ष तक लगातार शोध करने के बाद 1902 में उन्होंने रेडियम की खोज की। इस खोज के लिए 1903 में उन दोनों को भौतिक विज्ञान में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। मेरी भौतिक विज्ञान में नोबेल पुरस्कार पाने वाली संसार की पहली महिला थी। इसके बाद ईश्वर ने उन्हें दो सुंदर बेटियों की माँ बनने का गौरव प्रदान किया।

1906 में पियरे क्यूरी की एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई। मेरी ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने सारबोर्न विश्वविद्यालय में अध्यापन करना शुरू कर दिया तथा अनुसंधान करना भी जारी रखा। परिणामस्वरूप एक बार फिर 1911 में मेरी को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दो बार नोबेल पुरस्कार पाने वाली मेरी संसार की पहली वैज्ञानिक थी। 1934 में कैंसर से मेरी की मृत्यु हो गई परंतु उनकी प्रतिभा उनकी बेटी आयरिन में जीवित थी। 1935 में आयरिन ने अपने पति फ्रेड्रिक जूलियट के साथ कुछ नवीन रेडियोएक्टिव तत्वों की खोज के लिए संयुक्त रूप से नोबेल सम्मान प्राप्त किया।

मधु और शैली को दादा जी की सुनाई यह कहानी बहुत पसंद आई और उन्होंने मेरी के जीवन से प्रेरणा ली।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

मनुष्य को सदा मानवता के हित के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। मनुष्य के परिश्रम और उसकी अच्छी नीयत का परिणाम सभी के लिए सुखद होता है।

पाठ का वाचन

- अध्यापक/अध्यापिका पाठ का वाचन कक्षा में करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ।
- महत्वपूर्ण पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें।

- विज्ञान एवं मानवता के प्रति प्रेम से संबंधित अपने विचार व्यक्त करें।
- पाठ पढ़ाने के दौरान बीच-बीच में बच्चों से प्रश्न पूछें।
- बच्चों को पाठ में आए नए शब्दों के उच्चारण से अवगत कराएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें –

- आप मेरी क्यूरी के बारे में क्या जानते हैं?
- आपके सामने यदि कुछ नया शोध करने की बात आए तो आप क्या करोगे?
- आपके परिवार में क्या कोई क्यूरी की तरह विज्ञान के लिए समर्पित है?
- किस रूप में ऐसे लोग मानवता की सेवा करते हैं?